आकृति

अ- आत्मिक, कृ- कृत्य, ति- तिनका, अर्थात आत्मिक कृत्य का तिनका।

अशोक 'मानव'

आकृति का पूर्ण अर्थ होता है 'आत्मिक रचना के कृत्य का पिण्डिय स्वरुप।' आकृति का भौगोलिक नाम है 'आत्मिक रचना के गुणों का विकास करने हेतु एक स्वरुप का निर्माण करना।' आकृति का प्राकृतिक अर्थ है 'अपने गुणों के निर्माण हेतु तिनके को जोड़कर एक पिण्डिय रचना करना जो आत्मिक रचना की सुरक्षा करते हुए गुणों के निर्माण में सहयोग प्रदान करे।' आकृति का वैज्ञानिक अपने गुणात्मक उद्देश्य पूर्ति हेतु अपने पदार्थों को जोड़कर एक स्वरूप की रचना बनाना जो गुणात्मक बिन्दु की सुरक्षा करते हुए इच्छित कार्यों को पूरा करे। आकृति प्रकृति का भूगोल है। जो आन्तरिक रचना की सुरक्षा हेतु वाहन स्वरुप बनाती है। जो हानिकारक ऊर्जा को रोककर, सहयोगी ऊर्जा का एक निश्चित तापमान बनाकर आन्तरिक रचना को प्रेरित करती है। जिससे वह अपने गुणों का पूर्ण विकास कर पाता है। आकृति प्राकृतिक विज्ञान है जो जीवन विकास हेतु एक पृथ्वी और ब्रहमाण्डीय रचना तैयार करती है। इस रचना के स्वरुप (आकृति) सुविधानुसार तैयार होती है, जो सुविधानुसार अपना कार्य पूरा कर सके इस रचना का स्वाभाविक अर्थ होता है जो अपने स्वाभाव पर चलते प्रकृति का संचालन करता है। यह रचना गुणात्मक चुम्बकीय क्रिया से तैयार होती है। प्राकृतिक रचना अवगुणीय ऊर्जा को खत्म कर गुणीये ऊर्जा का विकास करना है। एक आकृति में कई गुणों की परिधि होती है जो बीजरूप को सुरक्षित करती है और उसी में गुणात्मक निकास का अंश होता है जो उचित जलवायु पाने के बाद अपना विकास शुरू करता है और एक नई आकृति का निर्माण करता है। यही बीज रूप का जीवन शरीर होता है। प्रकृति निर्माण में आकृति का विशेष महत्व है। यह प्रकृति में सर्ववाइव करने हेतु आवशक है।प्रकृति में भौगौलिक रचानानुसार आकृति का विकास स्वाभाविक रूप से हो जाता है। आकृति भौगौलिकता के आकर्षण का कारण बनती है यह आकर्षण आकृष्ट लोगो की ऊर्जा प्राप्त करता है। आकृति अपने ऊपर पड़ने वाली ऊर्जा को रोकती है और उसके अन्दर के पदार्थ हानिकारक ऊर्जा को वापस कर देते है। लाभ पहुचने वाली उर्जा को स्वीकार करके अपने गुणों का विकास करते है। आकृति सूर्यप्रकाश को रोककर अपना स्वाभाविक विकास करती है। जब प्रकाश उसके ऊपर पड़ता है। जो उससे ऊर्जा लेते है और प्रकाश पड़ने से उस आकृति स्वरुप में ऊर्जा जलकर निकलती है। जो प्रकृति निर्माण का कार्य करती है। आकृति प्रकृति का विज्ञान है। जिसका विकास स्वाभाविक रूप से होता है।

जीवन का विकास भौगौलिक आकृति के अनुसार होता है। अचर जीव की रचना बीज रूप में होता है, कुछ पौधे जल से नया विकास कर लेते है। बीजीय आकृति में ही समस्त गुण मौजूद होते है। जो जीवन धारण करने के बाद अपने गुण का विकास करते है। चर जीव की रचना सूक्ष्म आत्मिक विकास से होती है। इस आत्मिक रचना में उसके स्वाभाविक गुण मौजूद होते है जो जीवन धारण करने के बाद क्रियाशील हो जाते है। अपने स्वाभाव की सुरक्षा और विकास हेतु शरीर रुपी आकृति का निर्माण करते है। इनकी बनावट में ही इनके स्वभाव को देखा जा सकता है। मानव शरीर की आकृति में इनका स्वभाव देखा जा सकता है। शरीर के हर हर अंग से इसे जाना जा सकता है। इनकी भाषा लिपि से भी इसे जाना जा सकता है। भाषा की लिखावट पीछे से आगे की तरफ बढ़ना नई खोज और बदलाव को पसन्द करते है। जहाँ भी भाषा इस तरह की होती है वहाँ के लोगों में यह स्वभाव पाया जाता है। जिनकी भाषा आगे से पीछे की तरफ चलती है, ऐसे लोग अपने पीछे की संस्कृति को महत्व देते है, जिस धर्म को मानते है उसी पर चलने का स्वभाव होता है, अपने पूर्वजों द्वारा बताये गये मार्ग को सबसे अच्छा मानते है। जहाँ भी भाषा की लिखावट में डंडी लगती है वो लोग सामूहिक परिवार में रहना पसन्द करते है। इनका स्वभाव एकता बनाये रखने वाला होता है। जिनकी भाषा बहुत नजदीक होती है वे लोग समूह में रहना पसन्द करते है। इनका स्वभाव कौमिय होता है, आपस में एक दूसरे का सहयोग करते रहते है। जिनकी भाषा की लिखावट खुली और दूरी लिए होती है वे लोग स्वच्छ जीवन पसन्द करते है। ऐसे लोग स्वतंत्र मानसिकता के होते है। अपने जीवन में दूसरे का हस्तक्षेप नहीं पसन्द करते है। जिनकी भाषा प्रकृति के चिन्हों की तरह होती है वे लोग प्रकृति प्रेमी होते है। इनका स्वभाव प्रेम करने वाला होता है। भाषा की तरह शरीर की बनावट से भी व्यक्ति के स्वभाव को जाना जा सकता है। शंखाकार (आगे उभरा हुआ) मस्तिष्क के लोग विषय की गहराई तक जाते है और बारिक चीज को पकड़ते है। चौड़े मस्तिक के लोग अपने बल पर विश्वास करते है और बल से काम लेते है। जिनका मस्तिष्क चाँद की बनावट जैसा होता है वे लोग शान्त स्वाभाव के होते है। शान्ती से अपना कार्य करना पसन्द करते है। जिनका मस्तिष्क सूर्य की तरह गोलाई लिए होता है वे लोग परकर्मी होते है जीत से पायी गयी वस्तु से ही खुश होते है। जिनका मस्तिष्क आगे भरी और पीछे पतला होता है। वे लोग गणितीय वैज्ञानिक और तकनीकी स्वाभाव के होते है। दाँत की बनावट से भी व्यक्ति के स्वाभाव को बताती है। जिनके दाँत घने और पतले होते है वे स्थिर स्वाभाव के होते है। जिनके दाँत दूर-दूर होते है वे अस्थिर स्वाभाव के होते है। इस प्रकार आकृति से किसी भी जीव पदार्थ के स्वाभाव को जाना जा सकता है। जीव के स्वाभाव को जानकर उसे अपने आस-पास रखने अथवा उनका चित्र लगा लेने से उसका गुण प्रकाश पड़ने से या उसे देखते रहने से मिलता रहता है। जैसे हाथी, गाय, बैल, घोड़ा के चित्र लगाने से इनके गुण का लाभ मिलता रहता है। जमीन की आकृति शान्ति छोड़ने वाले जीव की तरह होती है तो लाभ पहुँचती रहती है। मकान की आकृति मानव की आकृति जैसा होना सबसे अच्छा वस्तु है। स्वपप्न में देखी गयी आकृति का जीवन में प्रभाव पड़ता है। इस लिए लाभ पहुचने वाली आकृति को याद रखें, हानि पहुँचाने वाली आकृति को भुला देना चाहिए। इसलिए आकृति का जीवन में विशेष महत्व होता है। प्रकृति द्वारा बनायी आकृति के साथ छेड़-छाड़ करना उसकी गुणात्मकता को व्यवधानित करना होता है। उसे उसी अवस्था में रहने देना ही खुशहाली है।